साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

भोपाल, सोमवार, 08-14 जनवरी 2024 वर्ष-9, अंक-39

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठः-8, मूल्यः- 2 रुपए

चौपाल से भोपाल तक

मोहन कैबिनेट का अहम फैसलाः मध्यप्रदेश में रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना होगी लागू

श्रीअन्न उत्पादक किसानों सरकार देगी दस रुपए किलो प्रोत्साहन

भोपाल। जागत गांव हमार

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में जबलपुर के शक्ति भवन में मंत्रि-परिषद की बैठक आयोजित की गई। मंत्री परिषद द्वारा जनहित के विभिन्न निर्णय लिए गए। मंत्रि-परिषद ने वीरांगना रानी अवंती बाई लोधी और रानी दुर्गावती को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके सम्मान में पुरस्कार शुरू करने का निर्णय लिया है। रानी अवंती बाई लोधी सम्मान और रानी दुर्गावती सम्मान हर वर्ष दिया जाएगा। विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष कर सफल होने वाली समाजसेवी महिलाओं को यह सम्मान प्रदान किया जाएगा। दोनों वीरांगनाओं को आदर्श मानते हुए उनके जीवन पर अध्ययन करने वालो को प्रोत्साहित करने के लिए फेलोशिप शुरू की जाएगी। भावी पीढ़ी को रानी अवंती बाई लोधी और रानी दुर्गावती के आदर्श जीवन से परिचय कराने के लिए फिल्म बनाई जाएगी और साथ ही विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विद्यालयों के पाठ्यक्रम में प्रेरणादायी विषय शामिल किया जाएगा। मंत्रि-परिषद ने मध्यप्रदेश में श्रीअन्न के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना लागू करने का निर्णय लिया है। योजना के अंतर्गत श्रीअन्न- कोदो-कुटकी, रागी, ज्वार, बाजरा आदि के उत्पादन करने वाले किसानों को प्रति किलो 10 रुपए की राशि प्रदान की जाएगी। यह राशि सीधे किसानों के खाते में डाली जाएगी।

» रानी अवंती बाई-दुर्गावती के सम्मान में पुरस्कार देगी सरकार

» प्रदेश में अब तेंदूपत्ता संग्रहण दर अब 4 हजार रुपए प्रति बोरा

11 जिलों में श्रीअन्न | मध्यप्रदेश में कोदो-कुटकी की खेती मंडला, डिंडोरी, बालाघाट, छिंदवाड़ा, अनूपपुर, सीधी, सिंगरौली, उमरिया, शहडोल, सिवनी और बैतूल जिलों में होती है। कोदो-कुटकी के किसानों की आय में वृद्धि के लिए फसल उत्पादन, भंडारण, प्रोसेसिंग, मार्केटिंग, उपार्जन, ब्रांड बिल्डिंग के साथ वैल्यू चेन विकसित करने के उद्देश्य से रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना लागू की जा रही है।

मिलेट वर्ष | गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश में एक नई मिलेट क्रांति का शुभारंभ किया है। उनकी पहल पर वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष घोषित किया गया है।

अब चार हजार रुपए बोरा तेंदूपत्ता

मंत्रि-परिषद ने तेन्दूपत्ता संग्रहण दर में वृद्धि करने का निर्णय लिया हैं। तेंदूपत्ता संग्रहण की दर 3 हजार रुपए प्रति मानक बोरा से बढ़ाकर 4 हजार रुपए प्रति मानक बोरा की गई है। इस निर्णय से प्रदेश के 35 लाख तेन्दूपत्ता संग्राहकों को लगभग 165 करोड़ रुपए का अतिरिक्त पारिश्रमिक प्राप्त होगा। पूर्व वर्षों में तेंदूपत्ता संग्रहण दर 1 हजार 250 रुपए प्रति बोरा थी। वर्ष 2022 से इसे बढ़ाकर 3 हजार रुपए प्रति बोरा की गई थी। अब तेंदूपत्ता संग्रहण दर 4 हजार रुपए प्रति बोरा कर दिया गया है।

सिंचाई परियोजनाओं की अनुमति

मंत्रि-परिषद ने मध्यप्रदेश में बुनियादी सिंचाई सुविधाओं का विकास करने की दृष्टि से और सिंचाई का रकबा बढ़ाने के लिए 32 हजार करोड़ रुपए की सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण की कार्यवाही की अनुमति दी है।

मुख्यमंत्री ने की गौशाला को पांच करोड़ रुपए देने की घोषणा

ग्वालियर की लाल टिपारा गौशाला और रीवा मंडी को सरकार बनाएगी आर्दश

» विंध्य का समग्र विकास होगा, रीवा के विकास संकल्प

» रीवा में 337.90 करोड़ के विकास कार्यो का भूमिपूजन-लोकार्पण

» संचालन का अध्ययन करने नगर निगमों से भी दल भेजे जाएंगे

» सीएम डॉ. यादव की दो टूक- अफसरों की लापरवाही बर्दाश्त नहीं

भोपाल। जागत गांव हमार

मुख्यमंत्री ने प्रदेश की कमान संभालते ही ग्वालियर और रीवा को दो बड़ी सौगात दी हैं। सीएम डॉ. मोहन यादव ने ग्वालियर स्थित लाल टिपरा आदर्श गौशाला के टीन शेड और सीसी रोड कार्यों का लोकार्पण के दौरान कहा कि सनातन धर्म का आधार ही गौसेवा है। एक साथ सभी देवताओं की पूजा करना हो तो केवल गौमाता की पूजा करने से सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं। लाल टिपरा गौशाला इस बात का उदाहरण है कि जहां संतो का प्रताप होता है वहां काम पूरे हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि लाल टिपरा गौशाला को प्रदेश की आदर्श गौशाला बनाया जाएगा। साथ ही ऐसी अन्य स्थानों पर ऐसी आदर्श गौशाला स्थापित करने के लिए कार्य योजना बनाई जाएगी। आदर्श गौशाला के अध्ययन के लिए अन्य नगर निगम से दलों को भेजा जाएगा। उन्होंने लाल टिपरा गौशाला के लिये पांच करोड़ देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रदेश में जो भी व्यक्ति अपने घर में गौपालन कर रहा है वे सभी गोपाल हैं। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के बाद यशोदा मां के आंगन में गाय के दूध, दही, माखन से ही उनका लालन-पालन हुआ था। गौ माता में हमारे 33 करोड़ देवी देवता भी

सीएनजी से चलेंगे वाहन

मुख्यमंत्री ने बताया कि सीएसआर फंड से 31 करोड रुपए की लागत से सीएनजी प्लांट भी यहां बनाया जा रहा है जिसमें 7 करोड़ की सीएनजी का उत्पादन होगा जिससे नगर निगम के वाहन चलेंगे। इससे गौशाला को आय भी होगी और उसके संचालन के लिए अतिरिक्त रूप से राशि भी उपलब्ध रहेगी। हरित प्रोजेक्ट से पर्यावरण को भी लाभ होगा गायों का संरक्षण होने के साथ अर्थव्यवस्था में भी सुधार होगा।

विकास के सभी काम होंगे

इधर, रीवा पहुंचे सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में विंध्य क्षेत्र का समग्र विकास होगा। विंध्य क्षेत्र अब विकास की नई ऊंचाइयों को छुएगा। शासन ने विकास कार्यों के विकेंद्रीकरण करने की व्यवस्था बनाई गई है। सरकार अब घर-घर तक विकास ले जाएगी। रीवा में विकास नहीं रुकेगा। प्रदेश में कोई योजना बंद नहीं होगी। विकास के सभी काम होंगे। अधिकारियों की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। 16 जनवरी को फिर से आऊंगा। अब तक प्रदेश का जितना विकास हुआ है हम आगे आने वाले 5 वर्ष में उसे विकास को चार गुना बढ़कर रहेंगे।

हर संकल्प पूरा होगा

मुख्यमंत्री ने कहा कि पाणिनि संस्कृत विवि का एक केंद्र रीवा में स्थापित होने वाला है। इसमें धनराशि की कोई कमी नहीं रहने दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने किसानों की सुविधा के लिए रीवा की कृषक उपज मंडी को आदर्श मंडी के रूप में विकसित करने की घोषणा की। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत की नई तस्वीर बनाने और भारत को विश्व में नंबर एक देश बनाने की दिशा में प्रयास करने का सभी का संकल्प है। इसे हर कीमत पर पूरा किया जाएगा।

सरकार का लक्ष्य-सबको रोजगार | हितग्राही मूलक योजनाओ का लाभ हर पात्र व्यक्ति तक पहुंचाया जाएगा। सरकार का प्रयास है कि प्रत्येक बेरोजगार को रोजगार मिले। उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव हो। इसके लिए आने वाले समय में मानव संसाधन पर अधिक निर्भर रहने वाले उद्योगों की स्थापना की जाएगी। खनिज संसाधन की उपलब्धता वाले जिलों में विशेष सब्सिडी देकर उद्योग विकसित किए जाएंगे।

-भोपाल और जबलपुर समेत कई जिलों में बनेगा गौवंश वन्य विहार

रीवा के बसामन मामा स्थान में प्रदेश का पहला गौवंश वन्य विहार बनाया गया

» मध्य प्रदेश गो संवर्धन बोर्ड ने इसके लिए प्रस्ताव तैयार कर लिया

भोपाल। जागत गांव हमार

रीवा के बाद अब जबलपुर, टीकमगढ़, मंदसौर और भोपाल-रायसेन जिले के बीच भी निराश्रित गोवंशीय पशुओं के लिए गोवंश वन्य विहार बनाए जाने की तैयारी है। मध्य प्रदेश गो संवर्धन बोर्ड ने इसके लिए प्रस्ताव तैयार कर लिया है, जिस पर शासन स्तर पर चर्चा भी की गई है। जल्द ही राजस्व विभाग द्वारा भूमि उपलब्ध कराने के बाद इनका काम शुरू कर दिया जाएगा। गौरतलब है कि रीवा के बसामन मामा स्थान में पहला गोवंश वन्य विहार बनाया गया है, जो लगभग 64 एकड़ भूमि में फैला हुआ है। इसमें पशुपालन विभाग द्वारा चिह्नित लगभग छह हजार निराश्रित गोवंश रखे गए हैं। इसका संचालन करने के लिए समिति गठित की गई है, जिसमें एक प्रबंधक, दो सहायक प्रबंधक, तीन पुरुष और छह महिला कर्मचारी शामिल हैं।

पुरुष कर्मचारियों को छह हजार

उद्योग उपक्रमों के सीएसआर फंड के सहयोग से दो करोड़ रुपए बैंक में स्थायी निधि के तौर पर जमा कराया गया है। इसके ब्याज से हर महीने कर्मचारियों को मानदेय दिया जाता है, जिसमें महिलाकर्मी को पांच और पुरुष कर्मचारियों को छह हजार दिए जाते हैं। अभी 8.50 लाख निराश्रित गोवंश - वर्ष 2019 की 20वीं गणना के अनुसार राज्य में निराश्रित गोवंशों की संख्या आठ लाख 50 हजार है। 21वीं पशु गणना में इनकी संख्या लगभग नौ लाख के पार पहुंचने की संभावना है।

इन बिंदुओं पर तैयार किया प्रस्ताव

राजस्व विभाग द्वारा लगभग 50 एकड़ भूमि उपलब्ध करानी होगी। वन विभाग को भूमि चिह्नित करनी होगी। पशुपालन विभाग द्वारा निराश्रित एक हजार गोवंश चिह्नित किए जाएंगे। मनरेगा द्वारा गोशालाओं को दिए जाने वाले फंड के तहत 10 गोशाला के हिसाब से तीन करोड़ 80 लाख देने होंगे। इनका संचालन रजिस्टर्ड एनजीओ या संस्था द्वारा कराया जाएगा।

गौवंश वन्य विहार के निर्माण से निश्चित रूप से सड़कों से निराश्रित गोवंशीय पशुओं की संख्या कम होगी। जबलपुर, टीकमगढ़, मंदसौर और भोपाल-रायसेन जिले के बीच भी निराश्रित गोवंशीय पशुओं के लिए गोवंश वन्य विहार बनाए जाने की तैयारी है।

स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरि, अध्यक्ष, मध्य प्रदेश गो संवर्धन बोर्ड

» सलाह पत्रक के अनुसार खेती करने से लहलहा रही फसल

» 10 सालों से जिले के किसानों को जानकारी उपलब्ध करा रहे

उत्पादन भी बढ़ाया | सोशल मीडिया ग्रुपों में जारी की जा रही सलाह

खंडवा में 30 हजार किसानों ने 40 फीसदी कम की खेती की लागत

खंडवा। जागत गांव हमार

खंडवा जिले के किसान अत्याधुनिक तकनीकों से जुड़कर खेती को लाभ का धंधा बना रहे हैं। इससे रासायनिक खाद-बीज का उपयोग कम हो रहा है, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए सही है। जिले के 30 हजार से अधिक किसान कृषि विज्ञान केंद्र के विज्ञानियों से जुड़े हैं। हर मंगलवार और गुरुवार को जारी होने वाले मौसम सलाह पत्रक का अनुसरण करते हैं। विभिन्न माध्यमों से विज्ञानियों से सलाह लेकर खेती करने से किसानों की 40 प्रतिशत तक लागत कम हुई है। खाद-बीज की कमी से जहां खेत की मृदा सुरक्षित रहती है वहीं उत्पादन में भी 20 से 25 प्रतिशत की बढ़ोतरी की बात किसान कह रहे हैं। मौसम वैज्ञानिक डॉ. सौरभ गुप्ता के अनुसार वे करीब 10 सालों से जिले के किसानों को जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं।

अब नहीं होता नुकसान- डॉ. गुप्ता ने बताया कि मौसम संबंधी जानकारी नहीं होने से किसानों को काफी नुकसान उठाना पड़ता था, लेकिन अब समय-समय पर मौसम की सटीक जानकारी उपलब्ध कराई जाती है, जिससे उनकी फसल को नुकसान होने से बचा लिया जाता है। इसके अलावा जिले में पांच हजार से ज्यादा किसान जैविक खेती भी कर रहे हैं।

बोवनी- सिंचाई की जानकारी

उल्लेखनीय है कि इस पत्रक में फसल बोवनी से लेकर मौसम और परिस्थितियों के अनुसार किसानों को दवाइयों, देखरेख के तरीके आदि की जानकारी दी जाती है। डॉ. गुप्ता ने बताया कि वे इंटरनेट मीडिया के 600 से ज्यादा ग्रुपों में जुड़े हैं। इनमें कृषि विभाग, कृषि विस्तार अधिकारियों, आइटीसी प्रोजेक्ट, आत्मा परियोजना, एनजीओ आदि के 150 से ज्यादा ग्रुप हैं।

दो दिन सलाह

हर मंगलवार, गुरुवार को मौसमी सलाह जारी की जा रही है। इसमें अगले पांच दिन के मौसम की जानकारी के साथ ही फसलों में डाली जानी वाली दवाई, सिंचाई, निंदाई आदि की भी संपूर्ण जानकारी होती है। डॉ. गुप्ता ने बताया अब वेधशाला, कृषि विज्ञान केंद्र में मृदा नमी, मृदा तापमान आदि की जानकारी देने वाले यंत्र भी लग चुके हैं। इससे किसानों को बुआई और सिंचाई का भी सही समय उपलब्ध हो रहा है।

10 एकड़ में 30 फीसदी कम हुई लागत

खंडवा की पुनासा तहसील के ग्राम सिवर निवासी किसान हरिओम माल्या ने बताया कि वे करीब चार साल से केवीके से जुड़े हैं। 10 एकड़ में खेती करते हैं। विज्ञानियों की सलाह अनुसार कार्य करने से उन्हें 10 एकड़ में 35 प्रतिशत तक लागत में कमी आई है। उन्होंने बताया कि वे प्रत्येक बैठक में जाते हैं।

मौसमी जानकारी होने से सतर्क

हरसूद तहसील के ग्राम गंभीर निवासी किसान जितेंद्र शर्मा के पास 30 एकड़ जमीन है। वे करीब तीन साल से मौसम वैज्ञानिकों से जुड़े हैं। शर्मा ने बताया कि पहले मौसम की जानकारी नहीं होने से फसलों को नुकसान होता था। अब मौसम की सही जानकारी होने से उसका अनुसरण कर कार्य करते है।

दवाइयों का खर्च कम

ग्राम बरुड़ निवासी किसान नरेंद्र पटेल के पास 21 एकड़ जमीन है। वे आठ साल से कृषि विज्ञानियों से जुड़े हैं। उन्होंने बताया कि मौसम अनुसार फसलों पर कार्य करने से लागत में कमी और उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। पहले हम दुकानदारों के बताए अनुसार खाद, बीज का उपयोग करते थे।

लाखों का फायदा

सुल्याखेड़ी निवासी किसान कपिल पाटीदार ने बताया कि पांच एकड़ जमीन में कपास, सोयाबीन फिर गेहूं और चने की खेती करते हैं। पहले 50 हजार तक लागत आती थी। अब समय पर सही जानकारी मिलने से लाभ प्राप्त हो रहा है।

-एकमुश्त 300 रुपए की हुई बढ़ोतरी

केंद्र ने नारियल की एमएसपी बढ़ाई

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने 2024 मौसम के लिए कोपरा (नारियल) के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को मंजूरी दे दी है. किसानों को लाभकारी मूल्य प्रदान करने के लिए सरकार ने 2018-19 के केंद्रीय बजट में घोषणा की थी कि सभी अनिवार्य फसलों का एमएसपी अखिल भारतीय भारित उत्पादन लागत के कम से कम 1.5 गुना स्तर पर तय किया जाएगा। 2024 सीजन के लिए मिलिंग खोपरा की उचित औसत गुणवत्ता के लिए एमएसपी 11,160 रुपए प्रति क्विंटल और बॉल कोपरा के लिए 12,000 रुपए प्रति क्विंटल तय किया गया है। इससे मिलिंग कोपरा के लिए 51.84 प्रतिशत और बॉल कोपरा के लिए 63.26 प्रतिशत का मार्जिन सुनिश्चित होगा, जो उत्पादन की अखिल भारतीय भारित औसत लागत से 1.5 गुना से भी अधिक है।

एमएसपी में 300 रुपए की बढ़ोतरी

मिलिंग कोपरा का उपयोग तेल निकालने के लिए किया जाता है, जबकि बॉल, खाद्य खोपरा को सूखे फल के रूप में खाया जाता है और धार्मिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है। केरल और तमिलनाडु मिलियन कोपरा के प्रमुख उत्पादक है, जबकि बॉल कोपरा का उत्पादन मुख्य रूप से कर्नाटक में होता है। 2024 मौसम में मिलिंग कोपरा के लिए एमएसपी में पिछले मौसम की तुलना में 300 रुपए प्रति क्विंटल और बॉल कोपरा के मूल्य में 250 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी हुई है। पिछले 10 वर्षों में सरकार ने मिलिंग खोपरा और बॉल कोपरा के लिए एमएसपी को 2014-15 में 5,250 रुपए प्रति क्विंटल और 5,500 रुपए प्रति क्विंटल से बढ़ाकर 2024-25 में 11,160 रुपए प्रति क्विंटल और 12,000 रुपए प्रति क्विंटल कर दिया जिसमें लगभग 113 प्रतिशत और 118 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

छिलका रहित नारियल की खरीद

भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ लिमिटेड (नैफेड) और राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता महासंघ (एनसीसीएफ) मूल्य समर्थन योजना (पीएसएस) के तहत कोपरा और छिलके रहित नारियल की खरीद के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसियों (सीएनए) के रूप में कार्य करना जारी रखेंगे।

किसानों को प्रोत्साहन

उच्च एमएसपी न केवल नारियल उत्पादकों के लिए बेहतर लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करेगा, बल्कि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारियल उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए कोपरा उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित भी करेगा। चालू मौसम 2023 में सरकार ने 1,493 करोड़ की लागत से 1.33 लाख मीट्रिक टन से अधिक कोपरा की रिकॉर्ड मात्रा में खरीद की है, जिससे लगभग 90,000 किसानों को लाभ हुआ है। मौजूदा मौसम 2023 में खरीद पिछले सीजन (2022) की तुलना में 227 प्रतिशत की वृद्धि का संकेत देती है।

उप मुख्यमंत्री बोले-रीवा संभाग में अपार खनिज

-समीक्षा बैठक से योजनाओं की होगी मॉनीटरिंग

बरगी बांध से बदलेगी सतना जिले की तस्वीर

भोपाल। जागत गांव हमार

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संभागीय समीक्षा बैठकें शुरू करके विकास योजनाओं की नियमित समीक्षा और निगरानी का अवसर दिया है। संभागीय समीक्षा बैठकों में योजनाओं के क्रियान्वयन से प्रभावी मानीटरिंग होगी। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल रीवा में संभागीय समीक्षा बैठक में संबोधित कर रहे थे। संभागीय समीक्षा बैठक में सांसदगण, मंत्रीगण, विधायकगण तथा सभी वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में बताया गया कि बरगी टनल परियोजना की कठिनाई को दूर कर इस वर्ष सितम्बर माह तक बरगी बांध का पानी सतना पहुंचाया जाएगा। बरगी बांध के पानी से सतना जिले की तस्वीर बदल जाएगी। बैठक में उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा संभाग में अपार खनिज संसाधन हैं। सिंगरौली में ऊर्जा उत्पादन का केन्द्र है। सतना में सीमेंट उत्पादन का केन्द्र है। इन्हें जोड़ने वाले ललितपुर-सिंगरौली रेलवे लाइन का काम तेजी से पूरा कराने के लिए सीधी और सिंगरौली के कलेक्टर भूअर्जन

की कार्रवाई तत्परता से करें। सीधी-सिंगरौली हाईवे का निर्माण पूरा कराने के लिए लगातार पहल की जा रही है। आगामी 6 माह में इस हाईवे की टू लेन सड़क तथा गोपद पुल का निर्माण पूरा हो जाएगा।

यह मुद्दे भी उठाए

बैठक में खराब ट्रांसफार्मर बदलने, सीधी में ट्रांसफार्मर डिपो बनाने, प्रधानमंत्री आवास योजना में छूटे हुए हितग्राहियों का नाम जोड़ने, जलजीवन मिशन के कार्यों की धीमी प्रगति, मनरेगा की तीन माह से लंबित मजदूरी के भुगतान, मऊगंज तथा मैहर जिले में समग्र पोर्टल एवं आधार पोर्टल को एकीकृत करने, गोवर्धन योजना, बगदरा अभ्यारण्य को डिनोटिफाई करने, चित्रकूट क्षेत्र में सिंचाई सुविधा, मंदाकिनी नदी की सफाई, रामपथ गमन मार्ग के निर्माण सहित विभिन्न मुद्दे उठाए।

किसानों ने जंगली जानवरों बचाने लोहे और पक्षियों के लिए नेट की जाल लगाई

अफीम फसल पर आई फूलों की बहार जनवरी या फरवरी में लगेगा चीरा

» पहले गर्मी के कारण अब कोहरे के कारण बीमारियांआएगी

» खाद बीज दवाई सहित खर्चादस आरी में डेढ़ लाख के करीब

मंदसौर। जागत गांव हमार

अंचल में अफीम की फसल पर फूल आने लगे हैं। जल्द ही ये डोडे का आकार लेंगे। इसके बाद चीरा लगाया जाएगा। जनवरी अंत या फरवरी के पहले सप्ताह में चीरा लगाने की शुरुआत होगी। किसान फसल को नवजात शिशु की तरह बड़ा कर रहे हैं। अफीम की फसल की सुरक्षा किसान इस तरह से कर रहे कि जंगली जानवर, पशु-पक्षियों से पूरी तरह से बचाव हो सके। वहीं पाले से सुरक्षा के लिए फसल के चारों ओर मक्का की फसल लगाकर सुरक्षा के इंतजाम किए गए हैं। किसानों ने अफीम के चारों ओर लोहे की जाल भी लगाई ताकि जंगली जानवर व पशु अंदर नहीं जा सकें और फसल में नुकसान नहीं कर सकें। वहीं डोडे आने के बाद तोते काफी नुकसान पहुंचाते हैं। इनसे बचाव के लिए किसानों ने अफीम फसल के ऊपर नेट की जाल बांधी है। किसानों के अनुसार फसल बोवनी से लगाकर चीरा लगाकर फसल उपज घर आने तक, दस आरी क्षेत्रफल में हकाई जुताई, निंदाई गुड़ाई, रासायनिक खाद, बीज, स्प्रिंकलर, आसपास लोहे की जाल, ऊपर नेट की जाल, अंदर फसल आड़ी ना हो जिसके लिए फसल के अंदर भी डोरियां एवं लुनाई चिराई तक कुल खर्च डेढ़ लाख के करीब हो जाता है।

काली मस्सी का प्रकोप

अब कोहरे के कारण काली मस्सी का प्रकोप दिखने लगा है। फसल को बच्चों से बढ़कर पाल पोस कर बड़ा करते हैं। फसल बोवनी से अंत तक निगरानी रखना पड़ती है। वहीं अब जंगली जानवर रोजड़े (नीलगाय) काफी तादात में हो गए हैं। फसल को बचाने के लिए चारों ओर मजबूत लोहे की जाल लगाना पड़ती है। डोड़े आने पर पक्षियों तोते से सुरक्षा के लिए फसल के ऊपर नेट की जाल लगाई गई। इससे पक्षी नुकसान नहीं कर पाएंगे। चीरा लगने के दौरान पश्चिम से तेज हवाएं चलती है। इसलिए फसल के अंदर भी दो बाय दो फिट की डोरिया लोहे के तार लगाकर बांधे गए। ताकि फसल आड़ी ना पड़े।

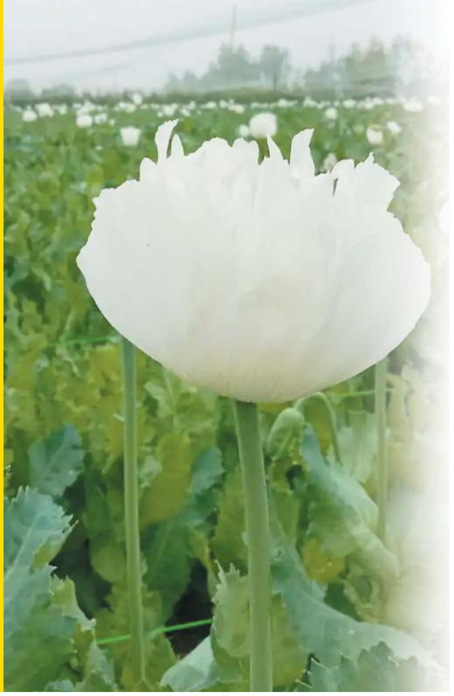

फसल में बीमारी का प्रकोप

कुचड़ोद के किसान बद्री लाल ओझा कुमावत ने बताया कि अफीम की फसल में फूल आ गए अब डोड़े बनेंगे। जनवरी अंत या फरवरी के पहले सप्ताह में चिरा लगेगा। अफीम की फसल में काफी खर्च आता है। वर्तमान में फसल 2 फीट के करीब हो गई। 2 फीट और बढ़ेगी। अफीम की फसल में 10 बार सिंचाई करना पड़ती है। वहीं इतनी ही बार दवाई का छिड़काव करना पड़ता है। अच्छी फसल के लिए प्रकृति का साथ देना जरूरी है। इस बार पहले काफी गर्मी पड़ी जिसके कारण फसल में बीमारी का प्रकोप देखा गया।

अफीम की फसल में काफी खर्च

फसल के चारों ओर मक्का की फसल लगाई है। ताकि शीतलहर के कारण फसलों पर ओस की बूंदे नहीं जम पाएं। पाला गिरे तो फसल में नुकसान न हो। अफीम की फसल में काफी खर्च आने लगा। बोवनी से लगाकर अंत तक सभी खर्च जोड़ें तो सवा लाख से डेढ़ लाख तक का खर्च बैठता है। चीरा लगाने के ही मजदूरों को 500 से 600 दिन के देना पड़ते हैं। जिसका खर्च ही 25 से 30 हजार हो जाता है। पोस्ता के भाव अच्छे मिल जाए, तो मजदूरी मिल जाती है। अन्यथा अफीम के भाव तो काफी काम है। 975 से 18 सो रुपए प्रति किलो के भाव से मिलते हैं। जो ऊंट के मुंह में जीरा के समान है।

गांव में 175 लाइसेंस | सरकार को अफीम में लागत को देखते हुए भाव में वृद्धि करना चाहिए। ताकि किसानों को मुनाफा मिल सके। गांव में 175 लाइसेंस दिए गए हैं। जिसमें 64 में लगेगा चीरा। बाकी सीपीएस पद्धति के लाइसेंस है। अफीम लंबरदार मुखिया प्रेम सिंह पंवार ने बताया कि गांव में 175 लाइसेंस अफीम के पट्टे हैं। जिसमें 64 पट्टो में ही चीरा लगेगा। बाकी सीपीएस पद्धति के हैं। ऐसे पट्टो में चीरा नहीं लगाया जाता है। इन किसानों को नारकोटिक्स विभाग को 8 इंच डंटल सहित डोडे तुलवाना जरूरी है।

-केले के तने से रेशे निकालने, सामग्री बनाने का दे रहे प्रशिक्षण

एक जिला एक उत्पाद में बुरहानपुर को मिला स्पेशल मेंशन अवॉर्ड

बुरहानपुर। जागत गांव हमार

नया साल बुरहानपुर जिले के लिए नई उपलब्धि लेकर आया है। एक जिला एक उत्पाद योजना में बेहतर काम करने के लिए केंद्र सरकार ने स्पेशल मेंशन अवार्ड से सम्मानित किया है। नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल, विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कलेक्टर भव्या मित्तल को यह पुरस्कार देकर सम्मानित किया। एक जिला एक उत्पाद के तहत बुरहानपुर जिले की मुख्य फसल केले को चयनित किया गया है। केले का उतपाद, व्यापार और प्रसंस्करण बढ़ा कर जिला आत्म निर्भर भारत की अवधारणा को साकार कर रहा है। जिले में केले से चिप्स के अलावा केला पाउडर, राखी, साज सज्जा की वस्तुएं, घरेलू सामान, चटाई, पर्स, टोकरियां, पायदान आदि बनाए जा रहे हैं। जिले की महिलाओं को केले के तने से रेशे निकालने और उनसे सामग्री बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। जिससे महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं।

विदेशों तक पहुंच रहा केला- जिले में केले के विक्रय को बढ़ाने के लिए रेलवे स्टेशन में स्टाल लगाया गया है। केले की पैकिंग और ग्रेडिंग की यूनिट स्थापित की गई हैं। जिसके माध्यम से प्रतिदिन लगभग 20 से 30 मीट्रिक टन केला दुबई, तुर्की, बहरीन सहित अन्य देशों में निर्यात किया जा रहा है।

» इस पहल से जिले की महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हो रहीं

» कलेक्टर भव्या मित्तल को केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने नवाजा

» केला उत्पादों के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत को दे रहे मूर्त रूप

» बुरहानपुर जिले की मुख्य फसल केले को चयनित किया गया

चिप्स यूनिट्स स्थापित

देश के विभिन्न राज्यों जैसे दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू कश्मीर आदि राज्यों में भी जिले से केले की आपूर्ति की जाती है। जिले में केले के प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए 25 रायपेनिंग चेंबर्स एवं विभिन्न बनाना चिप्स यूनिट्स स्थापित की गई हैं। जिले में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को केले के रेशे से सेनेटरी नेपकिन तैयार करने के प्रशिक्षण के साथ हस्तशिल्प कला भी सिखाई जा रही है।

ठंड के मौसम में पशुओं की देखभाल कैसे करें, कैसी हो आवास व्यवस्था

» डॉ. सोनू कुमार यादव
» अंजनी कुमार मिश्रा
» सुष्मिता तिवारी
» उपेन्द्र सिंह नरवरिया
» डॉ. प्रमोद शर्मा

(पीएच.डी शोधार्थी) (प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष) (पीएच.डी शोधार्थी) (सहायक प्राध्यापक) (सहायक प्राध्यापक)

डॉ. भावना अहरवाल, (सहायक प्राध्यापक)

पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय रीवा, मध्यप्रदेश

ठंड में पशुपालक खुद को तो सर्दी से बचाते हैं, लेकिन पशुओं की तरफ ध्यान नहीं देते हैं, जिससे कई बार पशु अधिक ठंड की वजह से कई बीमारियों के शिकार हो जाते हैं और पशुपालकों को नुकसान तक उठाना पड़ जाता है। वहीं, किसानों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि आखिर सर्दी में, खासकर दुधारू पशुओं की देखभाल कैसे की जाए, ताकि दुधारू पशुओं के दूध उत्पादन क्षमता पर बदलते मौसम का असर न पड़े।

सर्दियों में हमारे यहां तापमान 5-6 डिग्री से 22 डिग्री तक होता है इस तापमान में पशुओं से अत्यधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। वहीं पशुओं को ठण्डी हवाओं के प्रकोप से बचाना भी जरूरी है। इसलिए सर्दियों में पशु आवास का विशेष महत्व है...

पशु शाला में प्रत्येक गाय भैंस के लिए कम से कम साढे 5 फीट चैड़ी एवं 10 फीट लंबी पक्की जगह होनी चाहिए। पशु आवास का फर्श खुरदुरा होना चाहिए तथा नाली के लिए सही ढलान होनी चाहिए। पशु शाला की छत 10 फीट ऊंची होनी चाहिए यह ईट या फूस की हो सकती है। पशु शाला के दीवार चार से पांच फीट ऊंची होनी चाहिए बाकी के भाग में जाली लगाई जा सकती है। सर्दियों में रात के समय इस जाली वाले भाग में टाट बोरो को सिलकर परदा लगाया जा सकता है जिससे ठण्डी हवाओं से पशुओं को बचाया जा सके। पशु शाला की पश्चिमी दीवार पर 2 फीट चौड़ा नांद बनाना चाहिए। नांद के साथ स्वच्छ जल की व्यवस्था होनी चाहिए पानी के नांद को सप्ताह में 2 दिन चूने से पोंत दें, जिससे पशुओं में कैल्शियम की कमी नहीं होगी तथा उन्हें इस मौसम में होने वाले विभिन्न प्रकार के संक्रमणों से बचाया जा सकता है।

सर्दियों में जरूरी है कि पशुओं खासकर नवजात गो वत्सो को सर्दी से बचाने के लिए फर्श पर पुवाल का बिछावन डालें तथा इसको समय-समय पर बदलते रहे, जिससे इसमें नमी न आए। सर्दी के मौसम मे पशु शाला में अलाव की व्यवस्था रखनी चाहिए। मवेशियों को जूट के बोरे पहना सकते हैं दरअसल जूट का बोरा शरीर को गर्मी देता है।

सर्दियों में पशु पोषण कैसे करें ?

एक वयस्क पशु प्रतिदिन 6 किलो सूखा चारा तथा 15 से 20 किलो तक हरा चारा खिलाना चाहिए फ्लीदार तथा बिना फलीदार हरे चारे को फलीदार हरे चारे को समान अनुपात में मिलाकर खिलाना चाहिए। हरे चारे की फसल को जब आधी फसल में फूल आ जाए तब काट कर खिलाना पौष्टिकता की दृष्टिकोण से उपयुक्त रहता है।

उपलब्ध चारे अथवा भूसे का अभाव काल के लिए संरक्षण कैसे करें: इस मौसम में 50 से 60 दिनों बाद बरसीम आना शुरू हो जाएगी। अन्य चारे भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहते हैं पर गर्मियों के मौसम में पशुओं के लिए पर्याप्त चारा उपलब्ध नहीं हो पता है इसलिए जरूरी है कि चारे का संरक्षण किया जाए जो की हे बनाकर किया जा सकता है। हे मुलायम तने वाली घासों से बनाई जा सकती है। इसके लिए फसल को काटकर 5 से 10 किलो के बंडल बनाते हैं। इन बंडलों को एक दूसरे के सहारे खड़ा करके धूप में सुखाएं सुखाने की प्रक्रिया में जगह बदलते रहे ताकि बंडल ठीक से सूख जाए। भूसे को भी यूरिया से उपचारित करके उसमें प्रोटीन की मात्रा बढ़ाकर उसे ज्यादा पौष्टिक बनाया जा सकता है। इसके लिए 4 किलो यूरिया को 40 लीटर पानी में घोलें। यह मात्रा 100 किलो भूसे के लिए पर्याप्त होती है। 100 किलो पक्के अथवा कच्चे फर्श प्लास्टिक की सीट के ऊपर इस तरह से फैलाएं कि परत मोटाई लगभग तीन से चार इंच रहे इसके ऊपर यूरिया का घोल छिड़के फिर भूसे को पैरों से चल-चल कर या कूद कूद कर दबाएं। पुन: 100 किलो की भूसे की परत बनाएं तथा यूरिया का घोल छिड़कें। इस तरह से 100-100 किलो की 10 परते बनाएं एवं घोल का छिड़काव करने के बाद पैरों से दबाते जाएं। इस उपचारित भूसे को प्लास्टिक की सीट से ढक दें और जमीन से छूने वाले किनारों पर मिट्टी एवं पुवाल डालकर गोबर से लीप दें। इस तरह उपचारित भूसे के गर्मी में 21 दिन व सर्दी में 28 दिन के बाद खोलें पशुओं को खिलाने के पहले भूसे को लगभग 10 मिनट खुली हवा में फैला दें, जिससे उसकी गैस निकल जाए।

पशुओं का इन रोगों से बचाव कैसे करें: 1. दस्त से नवजात पशुओं को बचाव के लिए पशुशाला में साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें। **2.** जन्म से लेकर 2 माह तक गो वत्सो को अलग सुखे स्वच्छ एवं पूर्ण हवादार स्थान पर रखें समय-समय पर इस स्थान का निर्जलीकरण करें। **3.** गो वत्सो की रहने की जगह पर सर्दियों में पुवाल बिछाए तथा समय-समय पर इसको बदलते रहे। **4.** ठण्डी हवा के थपेड़ों से बचाने के लिए रात में टाट या बोरे के परदे का इस्तेमाल करें दिन के समय परदे हटा दें ताकि धूप आ सके। **5.** नवजात गो वत्सो को जन्म के आधे घंटे के अंदर खिस पिलाएं इससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। **6.** नवजात बछड़ो या बछड़ी को शरीर के वजन के हिसाब से दूध पिलाये शुरुआत में शरीर के वजन का 10 प्रतिशत दूध दिया जा सकता है जिसे बाद में धीरे-धीरे कम कर सकते हैं।

शीतकाल में कुक्कुट प्रबंधन और इससे होने वाले फायदे

» डॉ. रेशू मिश्रा
» डा. अंकुर खरे
» डा. सुनील नायक
» डा. राहुल शर्मा
» डॉ. निर्मला मुवेल
» डॉ. शानू देवी सिंगौर
» डॉ. शिवांश तिवारी
» डॉ. चमर्ति ज्योति
» डॉ. ब्रजमोहन सिंह धाकड़

पशु पोषण विज्ञान विभाग, पशु चिकत्सा विज्ञान एवं पशु पालन महाविद्यालय, नादेपविवि जबलपुर (मप्र)

पशु चिकित्सा जनस्वास्थ्य और महामारी विज्ञान विभाग, पशु चिकत्सा विज्ञान एवं पशु पालन महाविद्यालय, नादेपविवि जबलपुर (मप्र)

सर्दियों के मौसम में वातावरण के तापमान को कम करके कुक्कुट उत्पादन बढ़ाया जा सकता है, सर्दियों के दौरान जब तापमान 55 डिग्री फारेनहाइट से नीचे चला जाता है, तो अंडे के उत्पादन में कमी, पानी के सेवन में कमी, प्रजनन क्षमता और चूजे की मृत्यु दर आदि जैसी विभिन्न समस्याएं होती हैं। सर्दियों के दौरान कुक्कुट प्रबंधन किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

कुक्कुट पक्षी होते हैं, जिन्हें मनुष्यों द्वारा उनके अंडे, उनके मांस या उनके पंखों के लिए रखा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे स्तर पर मुर्गी पालन से अतिरिक्त आय प्राप्त होती है साथ ही मुर्गी का मल (विष्ठा) का उपयोग बटन मशरूम उत्पादन हेतु कम्पोस्ट बनाने तथा खाद के रूप में खेतों में प्रयोग से फसल की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में केंद्रीय पक्षी अनुसन्धान संस्थान, इज्ज़तनगर बरेली से विकसित उन्नत प्रजाति श्यामा, निर्भीक, उपकारी, तथा हितकारी का प्रयोग करें। इसके पालन में आने वाले व्यय की भरपाई पांचवें महीने में मुर्गा बेचकर हो जाती है। इसके उपरान्त मुर्गी से 12-15 माह तक अंडा उत्पादन से अच्छी कमाई प्राप्त होती है। वर्मी कम्पोस्ट बनाते समय प्राप्त हुए अधिक केचुओं को मुर्गों हेतु खाने को देने से अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। इसी प्रकार एजोला का भी उपयोग मुगोज़्ं द्वारा किया जाता है। करीब 40 मुर्गियों के विष्ठा से उतना ही पोषक तत्व प्राप्त होता है, जितना कि एक गाय के गोबर से प्राप्त होता है।

सर्दियों के दौरान कुक्कुट का प्रबंधन: सर्दियों के मौसम में वातावरण के तापमान को कम करके कुक्कुट उत्पादन बढ़ाया जा सकता है, सर्दियों के दौरान जब तापमान 55 डिग्री फारेनहाइट से नीचे चला जाता है, तो अंडे के उत्पादन में कमी, पानी के सेवन में कमी, प्रजनन क्षमता और चूजे की मृत्यु दर आदि जैसी विभिन्न समस्याएं होती हैं। इसलिए सर्दियों के दौरान कुक्कुट प्रबंधन किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। सर्दियों के मौसम के दौरान से कुक्कुट उत्पादन बढाने के लिए निम्नलिखित बिंदुओ पर ध्यान देना चाहिए -

1. कुक्कुट गृह की रूप रेखा : घर को इस तरह से बनाया जाना चाहिए कि दिन के समय अधिकतम सूर्य प्रकाश शेड में प्रवेश करे। एक आयताकार घर का पूर्व पश्चिम संरेखण सर्दियों में अधिकतम लाभ सौर ऊर्जा प्रदान करता है। पक्षियों को ठंडी हवाओं से बचाना चाहिए, इसके लिए बोरियों को उन स्थानों पर लटकाया जाना चाहिए जहां से ठंडी हवा प्रवेश करती है। शाम को सूरज की रोशनी जाते ही अगली सुबह सूरज की रोशनी आने तक इन बोरों को लटकाकर रखना चाहिए। एस्बेस्टस छत का उपयोग कुक्कुट पालन के लिए लाभदायक होता है क्योंकि वे घर के भीतर गर्मी रखते हैं, छत की ऊंचाई कम होनी चाहिए ।

2. पर्याप्त वायु-संचार: वायु -संचार अच्छा होना चाहिए लेकिन ठंडी हवा को प्रवेश होने से रोकें, फिसलने वाली खिड़कियों का उपयोग करना चाहिए तथा उन्हें दिन के दौरान खोल कर और रात के दौरान बंद कर के रखना चाहिए। अशुद्ध हवा को हटाने के लिए निकास पंखे की भी व्यवस्था होनी चाहिए। ठंड के मौसम के दौरान जब उपयोग ना हो रहा तब निकास पंखो को प्लास्टिक शीट से ढककर रखना चाहिए ।

3. खाद्य प्रबंधन : मुर्गी दो मुख्य उद्देश्यों के लिए भोजन का उपयोग करती है अर्थात, शरीर के तापमान को बनाए रखने और सामान्य शारीरिक गतिविधियों को जारी रखने के लिए और हड्डियों, मांस, पंख, अंडे आदि के विकास के लिए निमाज़्ण सामग्री के रूप में । जब मौसम ठंडा हो जाता है, तो मुगिज़्यों को भरपूर भोजन देना आवश्यक होता है क्योंकि उन्हें शरीर के तापमान को बनाए रखने के लिए अतिरिक्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है। सदिज़्यों के दौरान पक्षी की उच्च ऊर्जा आवश्यकता को पूरा करने के लिए तेल / वसा जैसे ऊर्जा समृद्ध ीतों को आहार में देना चाहिए। इसके साथ ही अतिरिक्त विटामिन और खनिजों को देना चाहिए । इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए विटामिन सी और विटामिन ई दोनों दिए जाना चाहिए , गमिज़्यों की तुलना में सर्दियों में फीडरों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए एवं फीडर हमेशा भरे रहने चाहिए।

4. जल प्रबंधन : पानी ताजा और साफ होना चाहिए। अगर पानी काफी ठंडा है तो उसमें गर्म पानी डालकर मुर्गियों को देना चाहिए, ताकि पानी सामान्य तापमान पर आ जाए। कई टीके / दवा/एंटीस्ट्रेस विटामिन पानी के माध्यम से मुर्गियों को दिए जाते हैं क्योंकि सर्दियों के मौसम के दौरान पक्षियों की पानी की खपत कम हो जाती है इसलिए दवा/टीका कम मात्रा में पानी में दिया जाए ताकि पक्षी कुल पानी का उपभोग कर सकें और प्रत्येक पक्षी को दवा/टीका का लाभ मिल सके। यदि आपके पक्षी बीमार पड़ जाते हैं, तो एक स्थानीय पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

कुक्कुट पालन के फायदे :

1.अन्य पशुधन पालन की तुलना में इसमें कम निवेश की आवश्यकता होती है।

2.कुक्कुट पालन आय का एक निरंतर स्रोत है।

3. कुक्कुट पालन मे पीने और सफाई दोनों के लिए बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है।

4. कुक्कुट पालन के लिए किसानों को लाइसेंस की आवश्यकता नहीं होती है।

कुक्कुट पालन के लिए जरुरी सावधानियां:

1.समय-समय पर टीकाकरण का अवश्य ध्यान रखे।

2. जरा सी लापरवाही रोग का कारण बन जाता है और पूरे कुक्कुट फ्लॉक को खोना पड़ सकता है इसलिए लापरवाही करने से बचे।

राष्ट्रीय पक्षी दिवस 2024: क्यों मनाया जाता है यह दिन

पक्षियों ने हमेशा हमारे दिलों में राज किया है, यही कारण है कि हम हर साल पांच जनवरी को राष्ट्रीय पक्षी दिवस मनाते हैं। हालांकि पक्षियों की कई प्रजातियां खतरे में हैं। इसकी कई वजह हैं, उनमें अवैध व्यापार, बीमारियां और उनका मूल निवास उजड़ना शामिल है। साथ ही, जलवायु परिवर्तन व ग्लोबल वार्मिंग ने पक्षियों की दिक्कतें बढ़ा दी हैं। पक्षी प्रकृति की सबसे खूबसूरत जीवों में से एक हैं। वे अपनी चहचहाहट से हमारे दिन को बेहतर बनाते हैं, वे देखने में बहुत सुंदर और रंगीन होते हैं। लेकिन इससे परे, वे पारिस्थितिकी तंत्र के भी महत्वपूर्ण हिस्से हैं। वे उनके स्वास्थ्य और जीवन शक्ति के बारे में जानकारी का संकेत देते हैं और अब समय आ गया है कि हम उनकी रक्षा करने के लिए हाथ मिलाएं और यह सुनिश्चित करें कि उनके पास पनपने के लिए एक स्वस्थ प्रकृति हो।

राष्ट्रीय पक्षी दिवस का इतिहास: चाहे वे आपके घर के पिछवाड़े की गोरियां हों या पार्क में इधर-उधर घूमने वाले आम कबूतर हों, पक्षियों ने हमेशा हमारे दिलों में आकर्षण, प्यार जगाया है। एक निश्चित विस्मय है जो केवल बाज को उड़ते हुए देखकर ही महसूस किया जा सकता है। दुर्भाग्य से, अधिकांश पक्षी या तो लुप्तप्राय हैं या संरक्षित हैं, यह ज्यादातर निवास स्थान के नुकसान या अवैध पालतू व्यापार के कारण है। इसीलिए पक्षी कल्याण गठबंधन ने राष्ट्रीय पक्षी दिवस बनाया। इन महत्वपूर्ण जीवों की कठिनाइयों और दुर्दशा के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हम उनके साथ एक स्वस्थ, अधिक टिकाऊ संबंध बनाने के लिए आवश्यक बदलाव शुरू कर सकते हैं। पक्षियों को अक्सर अतीत से जीवित संबंध माना जाता है, क्योंकि वे डायनासोर के विकास से सबसे निकट से संबंधित जीव हैं। वे अक्सर पारिस्थितिकी तंत्र में प्रमुख प्रजातियां हैं, जो इसके स्वास्थ्य और जीवन शक्ति के संकेतक हैं। उदाहरण के लिए, कठफोड़वाओं द्वारा छोड़े गए छेद अक्सर कई अन्य जानवरों के लिए घर के रूप में उपयोग किए जाते हैं। इसका मतलब है कि अगर कठफोड़वाओं के पास भोजन का स्रोत या सही प्रकार के पेड़ों की कमी हो जाए, तो क्या सभी जानवर भी चोंच मारने के अपने कौशल पर निर्भर हो जाएंगे?

प्रतियोगिता में के 54 आईआईटी, एनआईटी और इंजीनियरिंग संस्थानों ने हिस्सा लिया

खेती को आसान बनाने के लिए इंदौर में तैयार हो रही डिवाइस

-एसजीआईटीएस की मल्टी वेजिटेबल ट्रांस-प्लांटर डिजाइन को सिलेक्ट कर लिया गया

» पुणे में एसजीएसआईटीएस ने किया क्वलिफाई

» एक ऐसी डिवाइस तैयार करनी थी, जो मिर्च और टमाटर की बोपनी को आसान बनाए

इंदौर। जागत गांव हमार

शहर के प्रतिष्ठित श्री गोविंदराम सेकसरिया प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (एसजीएसआइटीएस) में स्टार्टअप, रिसर्च और इनोवेशन पर काफी काम होता है। इसी वजह से इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट में इस संस्थान की अलग पहचान है। संस्थान ने अपनी टेक्नोलाजी के बदौलत एक बार फिर बड़ा मुकाम हासिल किया है। खेती को आसान बनाने के लिए संस्थान में डिवाइस तैयार की जा रही है। दरअसल, संस्थान ने हाल ही पुणे में सोसायटी आफ आटोमोबाइल इंजीनियरिंग (एएसई) द्वारा आयोजित टीफान प्रतियोगिता में क्वालिफाई किया है। खास बात यह है कि इस प्रतियोगिता में देशभर के 54 आइआइटी, एनआइटी और प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थानों ने हिस्सा लिया था। वहीं सेंट्रल इंडिया से पहली बार किसी टीम ने हिस्सा लिया था। इस प्रतियोगिता सभी संस्थानों को खेती को आसान बनाने के लिए डिवाइस के माडल प्रस्तुत करने थे। एसजीआइटीएस ने मल्टी वेजिटेबल ट्रांसप्लांटर की डिजाइन तैयार की थी। इस डिवाइन को सिलेक्ट कर लिया गया है। अब इसे डिवाइस में तब्दील किया जाएगा।

डिपार्टमेंट आफ इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन के असिस्टेंट प्रोफेसर और आइडिया लैब के को-आर्डिनेटर कृष्णकांत धाकड़ ने बताया कि एएसई द्वारा टेक्नोलाजी इनोवेशन फोरम फार एग्रीकल्चरल नर्चरिंग (टीफान) प्रतियोगिता के पहले राउंड में संस्थान द्वारा तैयार किया गया माडल सिलेक्ट कर लिया गया है। इसी के चलते अब जून में आयोजित होने वाले फाइनल राउंड में इस डिजाइन को डिवाइस में बदलना होगा।

आटोमेटिक बोवनी करेगी मशीन

दरअसल, यह प्रतियोगिता हर वर्ष अलग-अलग थीम पर आयोजित होती है। इस बार की थीम मल्टी वेजिटेबल ट्रांसप्लांटर रखी गई है। इस थीम के तहत एक ऐसी डिवाइस तैयार करनी थी, जो मिर्च और टमाटर जैसी सब्जियों की बुआई को आसान बनाए। इसके लिए एसजीएसआइटीएस की टीम ने रोबोटिक्स डिवाइस की डिजाइन तैयार की थी। इसे ट्रैक्टर द्वारा इस्तेमाल किया जाएगा। इसके लिए मशीन में पौधे रखने होंगे और मशीन उन पौधों की आटोमेटिक बोआई कर देगी। इस डिजाइन को कालेज के 17 छात्रों की मदद से तैयार किया गया है। इसमें संस्थान के सभी विभागों के विद्यार्थी शामिल हैं।

एसएई पर एक नजर

सोसायटी आफ आटोमोबाइल इंजीनियरिंग (एसएई) एक आटोमोबाइल सेक्टर में रिसर्च की सोसायटी है। एसएई द्वारा रेसिंग कार प्रतियोगिता बाहा भी आयोजित की जाती है। इसी तरह टीफान प्रतियोगिता आयोजित होती है, जो खेती में उपयुक्त होने वाले उपकरणों पर आधारित रहती है। इस प्रतियोगिता को राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जाता है। इसमें देशभर के इंजीनियरिंग और आइआइटी संस्थान हिस्सा लेते हैं। इस बार प्रतियोगिता में 54 कालेजों ने हिस्सा लिया, जिसमें आइआइटी, एनआइटी और इंजीनियरिंग कालेज शामिल हैं। हालांकि इंदौर से आइआइटी हिस्सा नहीं ले रहा है लेकिन एसजीएसआइटीएस ने प्रतिभाग किया है।

दो राउंड में होती है प्रतियोगिता

इस बार प्रतियोगिता की थीम मल्टी वेजिटेबल ट्रांसप्लांटर रखी गई थी। इस थीम के तहत सभी कालेजों को मशीन की डिजाइन तैयार करनी थी और उसे पुणे में आयोजित क्वालिफाइंग राउंड में प्रस्तुत करना था। इस प्रतियोगिता में चुनी गई टीमों को डिवाइस तैयार करना होगी, जिसे जून में प्रतियोगिता के फाइनल राउंड में प्रस्तुत करना होगा। प्रतियोगिता में विजेता टीम को पुरस्कार मिलेगा। साथ ही यह टेक्नोलाजी कालेज द्वारा कंपनियों को बेची भी जा सकेगी। कालेज इसका पेटेंट भी ले सकता है। इस मशीन को तैयार करने में अभी एक लाख रुपये की लागत बताई जा रही है।

मंदसौर में कृषि मंडी के लेखापाल को 20 हजार रुपए घूस लेते पकड़ा

» सफाई ठेका स्वीकृत कराने के लिए मांगे थे 78 हजार

मंदसौर। जागत गांव हमार

मंदसौर कृषि उपज मंडी के लेखापाल को ईओडब्ल्यू उज्जैन की टीम ने 20 हजार की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। लेखापाल द्वारा कांट्रेक्टर को मासिक देयक न देते हुए कांट्रेक्टर से राशि जारी करने की एवज में 78 हजार रुपए रिश्वत की मांग की गई थी, जिसकी शिकायत कांट्रेक्टर ने एसपी ईओडब्ल्यू से की थी। उसी को लेकर ईओडब्ल्यू ने कार्रवाई की और आरोपी लेखापाल को 20 हजार की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया। मंदसौर कृषि उपज मंडी कार्यालय में उस समय हड़कंप मच गया, जब यहां 20 हजार की रिश्वत लेते हुए ईओडब्ल्यू की टीम ने मंडी में पदस्थ प्रमुख लेखापाल हरीश कुमार वशिष्ठ को रंगे हाथों गिरफ्तार किया। शिकायतकर्ता रवि राठौर ने बताया कि उसकी पारसलाल राठौर प्रोपाइटर वाल्मीकि कंस्ट्रक्शन का कृषि उपज मंडी में सब्जी मंडी की साफ-सफाई का ठेका जून 2023 में मंडी द्वारा स्वीकृत किया गया था। लेखापाल ने टेंडर की एवज में कांट्रेक्टर को मासिक देयक का भुगतान न करते हुए राशि जारी करने की एवज में आवेदक रवि राठौर से लेखापाल हरीश कुमार वशिष्ठ द्वारा 78 हजार की रिश्वत की मांग की थी। इसकी शिकायत रवि राठौर ने उज्जैन ईओडब्ल्यू एसपी दिलीप सोनी को की। इस पर एसपी दिलीप सोनी ने डीएसपी अजय कैथवास तथा अमित बट्टी के नेतृत्व में टीम गठित कर मंदसौर के लिए रवाना किया। जहां रिश्वत की पहली किश्त के रूप में 20 हजार रुपये लेते हुए आरोपी लेखापाल हरीश कुमार वशिष्ठ को गिरफ्तार कर लिया।

एक महीने पहले शुरू होगी एमएसपी पर खरीदी

2024 में ज्यादा गेहूं खरीदी पर राज्य सरकार का रहेगा फोकस

इंदौर। जागत गांव हमार

गेहूं की नई फसल होली के आसपास आना शुरू होगी। नई फसल को लेकर बाजार विश्लेषण में लगा है इसबीच सरकार देश के सरकारी गोदामों में घटे स्टाक को लेकर चिंतित और सजग दिख रही है। गेहूं का स्टाक देश में 16 साल में सबसे कमजोर बताया जा रहा है।बफर स्टाक का पैमाना 1 अप्रैल की अवधि में 7.46 मिलियन टन है। इसके मुकाबले फिलहाल स्टाक 8.35 मिलियन टन रह गया है। जो बफर स्टाक से मामूली ज्यादा है। लिहाजा सरकार की नजरें ज्यादा से ज्यादा खरीदी पर है और नई फसल पर उम्मीदें टिकी है। इस सीजन में देश में गेहूं का कुल उत्पादन 114 मिलियन टन रहने की उम्मीद है। बीते वर्ष यानी 2022-23 में सरकारी अनुमान के अनुसार गेहूं का उत्पादन 110.55 मिलियन टन था। हालांकि सरकारी एजेंसियां रिकार्ड उत्पादन के बावजूद खरीदी में पीछे रह गई। सिर्फ 26.2 मिलियन टन की सरकारी खरीदी हो सकी इसी तरह 2021-22 में भी 107.74 मिलियन टन के उत्पादन के मुकाबले खरीदी सिर्फ 18.79 मिलियन टन हो सकी इस सीजन में यूक्रेन संकट के चलते गेहूं जमकर निर्यात हुआ था।

गोदामों का स्टाक घटेगा- देश में तमाम योजनाओं में वितरण के लिए सालाना करीब 18.4 से 19 मिलियन टन गेहूं की आवश्यकता होती है। इसमें ओपन मार्केट में होने वाली सेल शामिल नहीं है। दरअसल 2023 में खुले बाजार में गेहूं व आटा की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए सरकार 6 मिलियन टन ओपन मार्केट में बेच चुकी है। फरवरी तक 2.5 मिलियन टन की और बिक्री की योजना है। ऐसे में सरकारी गोदामों का स्टाक और नीचे आ जाएगा।

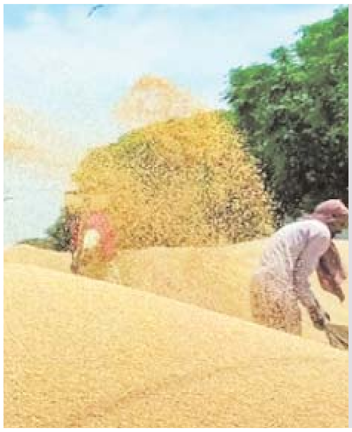

जल्दी खरीदी का निर्णय

लिहाजा स्टाक को समायोजित करने के लिए ही सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य पर जल्दी खरीदी का मन बना लिया है। ऐसे में बाजार की निगाह सरकारी खरीदी पर टिकी है। आसार है कि नए गेहूं की आवक के बाद भी क्योंकि सरकारी खरीदी का जोर रहेगा ऐसे में मंडियों में गेहूं के दाम नहीं टूटेंगे।

114 मिलियन टन उत्पादन की उम्मीद

केंद्र सरकार का कृषि विभाग उम्मीद कर रहा है कुछ गेहूं उत्पादक राज्यों में बोआई पिछड़ी नजर आ रही थी व जल्द ही कवर हो जाएगा। बीते सप्ताह तक 320.54 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोआई हुई थी। एक साल पहले 324.58 लाख हेक्टेयर से यह थोड़ा ही कम है। बोआई के आंकडे को देखकर ही सरकारी विभाग पर्याप्त खरीदी के लिए आश्वस्त नजर आ रहे हैं। एमएसपी में 7 प्रतिशत की वृद्धि भी सरकारी एजेंसियों को आश्वस्त कर रही है कि किसान उन्हें माल तुलवाएगा।

13 प्रदेशों के 80 सदस्य करेंगे पक्षियों का सर्वे

बांधवगढ़ में अब पता चलेंगी पक्षियों की नई प्रजातियां

उमरिया। जागत गांव हमार

बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में पहली बार बर्ड सर्वे होगा। दो दिवसीय बर्ड सर्वे के लिए 13 राज्यों से 80 वायलेटियर्स बांधवगढ टाइगर रिजर्व पहुंचे। जहां 44 स्थानों में ई-बर्ड एप के माध्यम से सर्वे होगा। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व बाघों के लिए ही नहीं बल्कि अलग-अलग समय पर पशु और पक्षियों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां कई अलग-अलग तरह के पक्षी पाए जाते हैं। इस सर्वे के माध्यम से अब पता चल पाएगा कि बांधवगढ़ में कितने पक्षी मौजूद हैं। बाघों के लिए विश्व प्रसिद्ध बांधवगढ टाइगर रिजर्व में पक्षियों का सर्वे शुरू हो गया है। दो दिवसीय सर्वे के लिए दूसरे प्रदेशों से सर्वे टीम बांधवगढ टाइगर रिजर्व पहुंच गई है। बांधवगढ टाइगर रिजर्व में टीम 44 जगहों पर ऐप के माध्यम से सर्वे का कार्य करेगी। ताकि यहां पक्षियों की संख्या और प्रजातियां प्रबंधन के सामने आ सके। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में बर्ड सर्वे पहली बार हो रहा है। प्रबंधन एनजीओ के साथ मिलकर सर्वे कर रही है। वहीं सर्वे टीम पक्षियों का रिकार्ड ऐप में दर्ज करेगी।

44 स्थानों पर 80 सदस्य | बांधवगढ टाइगर रिजर्व में पहली बार हो रहे बर्ड सर्वे के लिए प्रबंधन ने तैयारियां कर रखी है। साथ ही साथ देश के 13 प्रदेशों से 80 लोगों की सर्वे टीम बांधवगढ टाइगर रिजर्व पहुंची है। जहां टाइगर रिजर्व के 44 स्थानों में टीम के 80 सदस्य सर्वे करेंगे। ई बर्ड ऐप में पक्षियों की फोटो लोकेशन और अन्य जानकारियां दर्ज करेंगे। इसी महीने पक्षियों की प्रजातियां और संख्या सामने आ जाएगी।

2023 में मंडला में हुआ था सर्वे

मंडला जिले के कान्हा टाइगर रिजर्व में लास्ट बर्ड सर्वे 2023 में हुआ था। यह बर्ड सर्वे पक्षियों की संख्या जानने के लिए किया गया। इसमें यह भी पता लगाने की कोशिश की गई कि कितनी स्पीशीज टाइगर रिजर्व में पाई जाती है। पार्क प्रबंधन की मानें तो सर्वे के दौरान पक्षियों की करीब 290 प्रजातियां देखी गई हैं। साथ ही कुछ ऐसी भी प्रजातियां मिली हैं, जो लंबे समय से विलुप्त थीं। कान्हा टाइगर रिजर्व में हम पिछले 3 सालों से बर्ड सर्वे कर रहे हैं। इसका उद्देश्य है कि कान्हा में जो पक्षी पाए जाते हैं।

धार की मनासा सहकारी संस्था देश की चुनिंदा 500-बी पैक्स समितियों में शामिल

प्रबंधक राधेश्याम यादव सपरिवार दिल्ली के गणतंत्र दिवस समारोह में होंगे शामिल

धार। जिले के बदनावर विकासखंड की प्राथमिक कृषि साख सहकारी संस्था मनासा को विशेष उपलब्धि मिली है। संस्था का चयन भारत सरकार की सहकार से समृद्धि योजना अंतर्गत पैक्स समितियों का कंप्यूटराइज्ड शत-प्रतिशत पूर्ण किए जाने के फलस्वरूप देश की चुनिंदा 500-बी पैक्स समितियों में किया गया है। मनासा समिति प्रबंधक राधेश्याम यादव सपरिवार दिल्ली के गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होने का आमंत्रण भी मिला है। इस उपलब्धि पर कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने समिति प्रबंधक राधेश्याम यादव की सराहना की है। कलेक्टर ने समिति के पदाधिकारियों से मुलाकात कर मार्गदर्शन दिया। उप आयुक्त सहकारिता वर्षा श्रीवास ने बताया कि कलेक्टर प्रियंक मिश्रा के मार्गदर्शन में सहकारिता विभाग अंतर्गत उक्त समिति का प्रदर्शन श्रेष्ठ रहा है। अब यह समिति भी नेशनलाइज बैंकों की तरह अपने सदस्यों को आनलाइन ऋण वितरण, बैंकिंग व्यवहार आदि सुविधाएं प्रदान कर सकेगी। पैक्स कंप्यूटराइज्ड का उद्देश्य संस्थाओं के कार्य में पारदर्शिता, ऋण वितरण का सरलीकरण, भुगतान असंतुलन कम करना आदि है। योजना सहकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा नियंत्रित होकर इसका क्रियान्वयन नाबार्ड, नई दिल्ली द्वारा किया जा रहा है।

कृषि वैज्ञानिकों ने कहा-कृषिगत गतिविधियों में विशेष सावधानियां रखें किसान

वर्तमान मौसम को देखते हुए आलू की फसल में झुलसा रोग आने की संभावना अधिक

शिवपुरी। जागत गांव हमार

कृषिगत गतिविधियों में विशेष सावधानियां रखें किसान -कृषि विज्ञान केंद्र - विगत तीन-चार दिनों के मौसम एवं आगामी प्राप्त हो रहे मौसम पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र शिवपुरी द्वारा जिले के कृषकों, पशुपालकों, मत्स्य पालकों एवं ग्रामीणों के लिए तकनीकी परामर्श दिया गया है। वर्तमान मौसम को देखते हुए आलू की फसल में झुलसा रोग आने की संभावना अधिक है। किसान मेटालेक्जिल एवं मेंकोंजेव के रेडीमिक्स मिश्रण दवा का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर 10 दिन के अंतराल से 02 बार छिड़काव करें। सरसों फसल में तना गलन (पोलियो रोग) आने की संभावना अधिक बढ़ जाती है। सुरक्षात्मक उपाय के लिए 15 दिन के लिए फसल में पानी न लगाएं। फसलों को शीत लहर से बचाने के लिए हल्की सिंचाई करें या खेत में नमी बनाये रखें। रात के समय खेत के उत्तर-पश्चिम दिशा में सावधानीपूर्वक कचरा-कूड़ा इस प्रकार जलायें कि धुआं होता रहे एवं वहां के सूक्ष्म जलवायु (माइक्रोक्लाइमेट) में सुधार हो सके।

मौसम/आसमान साफ होने पर हवाएं नहीं चलने की स्थिति में तापमान गिरने की अधिक संभावना रहती है, ऐसी दशा में पाला गिरता है। इस स्थिति में फसलों को पाले से बचाव के लिए घुलनशील गंधक 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के मान से घोल बनाकर फसलों पर छिड़काव करें। फलदार पौधों में थालों में निराई-गुड़ाई कर 5 किग्रा वर्मीकम्पोस्ट के साथ सल्फर एवं पोटाश का मिश्रण 250 ग्राम प्रति पौधा दें। दुधारू पशुओं को बाहर न निकालें, शेड में ही रखें, स्वच्छ एवं ताजा या गुनगुना पानी गुड़ के साथ पिलायें एवं पशु आहार में सरसों की खली भी प्रयोग में लायें। ठंड एवं शीत लहरों से पशुओं के शरीर को जूट के बोरों से ढककर रखें तथा डेयरी शेड के आसपास अलाव जलायें। अधिक ठंड के मौसम में मछली पालन तालाब की ऊपरी सतह अधिक ठण्डी हो जाने के कारण संपर्क में आने से मछलियों की मृत्यु हो सकती है। तालाब के पानी का स्तर 1.5-2.0 मीटर तक बढ़ा लें, क्योंकि पानी की ऊपरी 01 फीट की सतह ही अत्यधिक ठंडी होती है। ठंड के मौसम में मछली का मेटाबोलिज्म (चयापचयी क्रिया) कम होती है। इस मौसम में परिपूरक आहार (कृत्रिम भोजन) का प्रयोग कम करें ,क्योंकि मछली ठंड के मौसम में कम भोजन ग्रहण करती है।

कृषि मंत्री कंषाना ने कार्यभार ग्रहण किया

भोपाल। किसान-कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री एदल सिंह कंषाना ने कार्यभार ग्रहण किया। उन्होंने कार्यभार ग्रहण से पूर्व मंत्रालय में सपत्नीक पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव कृषि अशोक वर्णवाल, अन्य अधिकारी और जन-प्रतिनिधियों के साथ परिजन भी मौजूद रहे। मंत्री कंषाना ने युवा उद्यमियों को सौगात देने के साथ कार्य की शुरुआत की। उन्होंने 265 मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं के संचालन का जिम्मा युवा उद्यमियों को सौंपने संबंधी कार्य-योजना का अनुमोदन किया। इसके पूर्व एसीएस कृषि वर्णवाल ने बताया कि कार्य-योजना के क्रियान्वयन से 265 मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं में मृदा नमूनों के परीक्षण का जिम्मा युवा उद्यमियों को मिलेगा। इससे रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी और नि:संदेह बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

कड़क सर्दी के कारण फसलों पर पाला पड़ने की बढ़ जाती है संभावना

सर्दी में पाले से फसलों की सुरक्षा के लिए किसाने लें सलाह

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख एवं वैज्ञानिकों द्वारा सर्दी में पाले से फसलों की सुरक्षा के लिए समसामयिकी सलाह दी जाती है कि सर्दी का मौसम शुरू होते ही सबके सामने ठंड एक समस्या बनकर खड़ी हो जाती है। जब सर्दी अपनी चरम सीमा पर होती है, उस वक्त किसानों को भी अपनी फसलों को बचाने की चिंता सताने लगती है। कड़क सर्दी के कारण फसलों पर पाला पड़ने की आंशका बढ़ जाती है। जिससे रबी की फसलों को काफी नुकसान पहुंचता है। किसान चाहते हैं कि वे पाले से किसी भी तरह अपनी आलू, अरहर, चना, सरसों, तोरिया, बागवानी फसलें, गेहूं, जौ आदि फसलों में ठंड का अधिक प्रकोप देखा जाता है। पाले से प्रभावित पौधों की कोशिकाओं में उपस्थित पानी सर्वप्रथम अंतरकोशिकीय स्थान पर इकट्ठा हो जाता है। इस तरह कोशिकाओं में निर्जलीकरण की अवस्था बन जाती है। दूसरी ओर अंतरकोशिकीय स्थान में एकत्र जल जमकर ठोस रूप में परिवर्तित हो जाता है, जिससे इसके आयतन बढ़ने से आसपास की कोशिकाओं पर दबाव पड़ता है। यह दबाव अधिक होने पर कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार कोमल टहनियां पाले से नष्ट हो जाती हैं। प्रायः पाला पड़ने की आशंका एक जनवरी से 10 जनवरी तक अधिक रहती है। जब आसमान साफ हो, हवा न चल रही हो और तापमान कम हो जाये तब पाला पड़ने की आशंका बढ़ जाती है। दिन के समय सूर्य की गर्मी से पृथ्वी गर्म हो जाती है तथा पृथ्वी से यह गर्मी विकिरण द्वारा वातावरण में स्थानातंरित हो जाती है। इसलिए रात्रि में जमीन का तापमान गिर जाता है, क्योंकि पृथ्वी को गर्मी तो नहीं मिलती और इसमें मौजूद गर्मी विकिरण द्वारा नष्ट हो जाती है। तापमान कई बार 0 डिग्री सेल्सियस या इससे भी कम हो जाता है। ऐसी अवस्था में ओस की बूंदें जम जाती हैं। इस अवस्था को हम पाला कहते हैं। पाला दो प्रकार का होता है पहला यह उस अवस्था को कहते हैं जब जमीन के पास हवा का तापमान बिना पानी के जमे शून्य डिग्री सेल्सियस से कम हो जाता है।

नर्सरी में पौधों को रात में प्लास्टिक की चादर से ढकने की सलाह

वायुमंडल में नमी इतनी कम हो जाती है कि ओस का बनना रुक जाता है जो पानी को जमने से रोकता है। दूसरा इसमें वायुमंडल में तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से कम हो जाता है। इसके साथ ही वायुमंडल में नमी ज्यादा होने की वजह से ओस बर्फ के रूप में बदल जाती है। पाले की यह अवस्था सबसे ज्यादा हानि पहुंचाती है। यदि पाला अधिक देर तक रहे, तो पौधे मर भी सकते हैं। जब वायुमंडल का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस से कम तथा शून्य डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो पाला पड़ता है। इसलिए पाले से बचने के लिए किसी भी तरह से वायुमंडल के तापमान को शून्य डिग्री सेल्सियस से ऊपर बनाये रखना जरूरी हो जाता है। ऐसा करने के लिए कुछ उपाय सुझाये गये हैं, जिन्हें अपनाकर हमारे किसान भाई ज्यादा फायदा उठा सकेंगे। बारानी फसल में जब पाला पड़ने की आशकां हो तो पाले की आशंका वाले दिन फसल पर व्यावसायिक गधंक के तेजाब का 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें। इस प्रकार इसके छिड़काव से फसल के आसपास के वातावरण में तापमान बढ़ जाता है और तापमान जमाव बिंदु तक नहीं गिर पाता है, इससे पाले से होने वाले नुकसान से पफसल को बचाया जा सकता है। पाले से सबसे अधिक नुकसान नर्सरी में होता है। नर्सरी में पौधों को रात में प्लास्टिक की चादर से ढकने की सलाह दी जाती है। ऐसा करने से प्लास्टिक के अंदर का तापमान 2-3 डिग्री सेल्सियस बढ़ जाता है। इससे सतह का तापमान जमाव बिंदु तक नहीं पहुंच पाता और पौधे पाले से बच जाते हैं लेकिन यह महंगी तकनीक है।

किसान पुआल का प्रयोग दिसंबर से फरवरी तक करें

गांव में पुआल का इस्तेमाल पौधों को ढकने के लिए किया जा सकता है। पौधों को ढकते समय इस बात का ध्यान जरूर रखें कि पौधों का दक्षिण-पूर्वी भाग खुला रहे ताकि पौधों को सुबह व दोपहर को धूप मिलती रहे। पुआल का प्रयोग दिसंबर से फरवरी तक करें। मार्च का महीना आते ही इसे हटा दें। नर्सरी पर छप्पर डालकर भी पौधों को खेत में रोपित करने पर पौधों के थावलों के चारों ओर कड़बी या मूंज की टाटी बांधकर भी पौधों को पाले से बचाया जा सकता है। पाले से बचाव के लिए खेत के चारों ओर मेड़ पर पेड़-झाड़ियों की बाड़ लगा दी जाती है। इससे शीतलहर द्वारा होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है। अगर खेत के चारों ओर मेड़ पर पेड़ों की कतार लगाना संभव न हो तो कम से कम उत्तर-पश्चिम दिशा में जरूर पेड़ की कतार लगानी चाहिये जो अधिकार इसी दिशा में आने वाली शीतलहर को रोकने का काम करेगी। पेड़ों की कतार की ऊंचाई जितनी अधिक होगी शीतलहर से सुरक्षा उसी के अनुपात में बढ़ती जाती है और यह सुरक्षा चार गुना दूरी तक होती जिधर से शीतलहर आ रही है। पेड़ की ऊंचाई के 25-30 गुना दूरी तक जिधर शीतलहर की हवा जा रही है फसल सुरक्षित रहती है। पपीता व आम के छोटे पेड़ को प्लास्टिक से बनी क्लोच से बचाया जा सकता है। इस तरह का प्रयोग हमारे देश में प्रचलित नहीं है। परन्तु हम खुद ही प्लास्टिक की क्लोच बनाकर इसका प्रयोग पौधों को पाले से बचाने के लिए कर सकते हैं। क्लोच से पौधों को ढकने पर अंदर का तापमान तो बढ़ता ही है साथ में पौधे की बढ़वार में भी मदद करता है इस प्रकार हम फसल, नर्सरी तथा छोटे फल वृक्षों को पाले से होने वाले नुकसान से बहुत ही आसान एवं कम खर्चीले तरीकों द्वारा बचा सकते हैं।

घास-फूस जलाकर धुआं कर देना चाहिए

विदेशों में महंगे पौधों को बचाने के लिए हीटर का प्रयोग भी किया जाता है लेकिन हमारे देश में अभी यह संभव नहीं है। हमारा यह विश्वास है कि किसान भाई पफसल की बढ़वार व पैदावार बढ़ाने के लिए ऊपर बताये गये इन तरीकों को अपनाते हैं तो निश्चित रूप से पाले के कारण रबी फसलों में होने वाले नुकसान को काफी हद तक बचाने में सफलता मिल सकती है। सरसों, मटर, आलू, टमाटर तथा पत्तेदार सब्जियों को पाले से बचाने के लिए देर रात खेत के उत्तर पश्चिम दिशा में घास फूस जलाकर धुआं कर देना चाहिए। धुंए की परत छा जाने से पाले को पौधे पर गिरने से रोकती है। खेत व पौधों का तापमान भी कम नहीं हो पाता, जिससे उनका पाले से बचाव हो जाता है। बागों के उत्तर पश्चिम दिशा में भी रात को दुआ करके उन्हें पाले से बचाया जा सकता है। धुआं करते समय सावधानी रखें ताकि आग से फसलों को नुकसान नहीं पहुंचे। पाला पड़ने से पहले पानी में 2 प्रतिशत यूरिया मिलाकर छिड़काव किया जाए तो पाले के प्रभाव को कम किया जा सकता है। यूरिया की मदद से पौधों की कोशिकाओं में पानी आने जाने की क्षमता बढ़ जाती है। वही घुलनशील सल्फर 80 प्रतिशत, डब्ल्यूडीजी की 40 ग्राम मात्रा प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। कोहरे से सब्जी फसलों को बचाने के उपाय कोहरे से सब्जी की फसलों को बचाने के लिए 1 सप्ताह के अंतर पर बायर का लूना, अमिस्टार या कस्टोडिया का 15 एमएल प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। इसके अलावा मेरिवान फफूंद नाशक रसायन का 10 एमएल दवा प्रति 165 लीटर पानी में घोल बनाकर जब फसलों पर ओस न हो तब छिड़काव करना चाहिए। इसके साथ ही इसमें 25 ग्राम बोरान भी मिला देने चाहिए।

अनाज भीगने के बाद किसानों के चेहरे पर मायूसी

शेड नहीं होने से भीगा 600 क्विंटल मक्का, मंडी प्रबंधन की लापरवाही

छिंदवाड़ा। जागत गांव हमार

मंडी में शेड ना होने की वजह से किसानों को अपनी उपज खुले आसमान के नीचे रखना पड़ता है। कई बार किसानों ने इस समस्या को लेकर आवाज उठाई है, लेकिन आज तक उनकी समस्या को लेकर ध्यान नहीं दिया गया है।

फिलहाल आज बारिश के बाद किसानों की मक्का की उपज बुरी तरह से बर्बाद हो गई। जिसके बाद किसानों ने इसका ठीकरा मंडी प्रबंधन पर फोड़ा है। किसानों ने प्रशासन से खराब हुए मक्का का उचित मुआवजा मांगा है। किसानों का कहना है कि यहां पर यदि शेड की व्यवस्था होती तो शायद उनकी उपज बच जाती, लेकिन समस्या ये है कि मंडी प्रांगण के बाहर आज तक शेड की व्यवस्था नहीं कराई गई है, जिसके कारण आए दिन यह समस्या देखने को मिलती है।

अचानक हुई बेमौसम बारिश के कारण मंडी के बाहर रखा किसानों का मक्का भीग गया, जिसके बाद किसानों ने तत्काल इस पर व्यवस्था बनाने की मांग की है। मंडी प्रबंधन अब नए जिले के गठन के बाद अपनी सुविधाओं में विस्तार करना चाहिए ताकि किसानों को हो रही समस्याओं का अंत हो सके। वहीं आज किसानों का अनाज भीगने के बाद उनके चेहरे पर मायूसी दिखाई दी।

दलहनी फसलों और सब्जियों में फूल झड़ने की रोकथाम व उपचार

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को दलहनी फसलों एवं सब्जियों में फूल झड़ने की रोकथाम के लिए समसामयिकी जारी की है। इस समय किसानों के खेत में दलहनी फसलों में देखने को मिल रहा है कि फूल झड़ रहे हैं। इस समस्या की रोकथाम के लिए नेफथलीन एसिटिक एसिड का 4.5 मिमी/पम्प या 45 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। नेफथलीन एसिटिक एसिड सक्रिय संघटक का होता है। यह एक पादप वृद्धि नियामक है। जिसका उपयोग फूलों को प्रेरित करने, फूलों की कलियों और कच्चे फलों को झड़ने से रोकने के लिए किया जाता है। इस समय मौसम में तापमान 10 डिग्री व आद्रता 85 फीसदी है। इस कारण यह समस्या देखने में आ रही है। मौसम खुलने के बाद यह समस्या दूर हो जाएगी। फसलों में फूल आने के समय सिंचाई न करें। फसलों में खरपतवारों की रोकथाम, निंदाई एवं गुड़ाई ना करें। दलहनी फसलों में 30 दिन तक कोई भी शाकनासी का उपयोग नहीं करें।

दलहन क्षेत्र में 2027 तक आत्मनिर्भर हो जायेगा भारतः अमित शाह

वेब पोर्टल के जरिए किसानों से डायरेक्ट होगी अरहर दाल की खरीद, ई-समृद्धि व एक अन्य पोर्टल लोकार्पित किया

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में एक समारोह में तूअर दाल उत्पादक किसानों के पंजीकरण, खरीद, भुगतान के लिए ई-समृद्धि व एक अन्य पोर्टल लोकार्पित किया। भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ (नेफेड) तथा भारतीय राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारिता संघ (एनसीसीएफ) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के अवसर पर दलहन में आत्मनिर्भरता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित हुई। मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने कहा कि ये पोर्टल के जरिए ऐसी शुरूआत की है, जिससे नेफड व एनसीसीएफ के माध्यम से किसानों को एडवांस में रजिस्ट्रेशन कर तूर दाल की बिक्री में सुविधा होगी, उन्हें एमएसपी या फिर इससे अधिक बाजार मूल्य का डीबीटी से भुगतान हो सकेगा। उन्होंने कहा इस शुरूआत से आने वाले दिनों में किसानों की समृद्धि, दलहन उत्पादन में देश की आत्मनिर्भरता और पोषण अभियान को भी मजबूती मिलती दिखेगी। साथ ही क्रॉप पैटर्न चेंजिंग के अभियान में गति आएगी और भूमि सुधार एवं जल संरक्षण के क्षेत्रों में भी बदलाव आएगा। आज की शुरूआत आने वाले दिनों में कृषि क्षेत्र में प्रचंड परिवर्तन लाने वाली है।

दलहन क्षेत्र में भारत 2027 तक हो जायेगा आत्मनिर्भर

शाह ने कहा कि दलहन के क्षेत्र में देश आज आत्मनिर्भर नहीं है, लेकिन हमने मूंग व चने में आत्मनिर्भरता प्राप्त की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दलहन उत्पादक किसानों पर बड़ी जिम्मेदारी डाली है कि वर्ष 2027 तक दलहन के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर हों। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि किसानों के सहयोग से दिसंबर 2027 से पहले दलहन उत्पादन के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर बन जाएगा और देश को एक किलो दाल भी आयात नहीं करना पड़ेगी। शाह ने कहा कि हमने निश्चित कर लिया है कि जो किसान उत्पादन करने से पहले ही पोर्टल पर अपना रजिस्ट्रेशन कराएगा, उसकी दलहन को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर शत-प्रतिशत खरीद कर लिया जाएगा।

पेट्रोल के कुएं की तरह हो जाएंगे मक्के खेत

शाह ने कहा कि इसके साथ ही इथेनॉल उत्पादन भी हमें बढ़ाना है। प्रधानमंत्री मोदी ने पेट्रोल के साथ 20 प्रतिशत इथेनॉल मिलाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए लाखों टन इथेनॉल की जरूरत होगी। नेफेड व एनसीसीएफ इसी पैटर्न पर आगामी दिनों में मक्के का रजिस्ट्रेशन चालू करने वाले हैं, जो किसान मक्का बोएगा, उसके लिए सीधा इथेनॉल बनाने वाली फैक्ट्री के साथ एमएसपी पर मक्का बेचने की व्यवस्था कर देंगे। इससे किसानों को भटकना नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा कि इससे आपका खेत मक्का उगाने वाला नहीं, बल्कि पेट्रोल बनाने वाला कुंआ बन जाएगा। देश के पेट्रोल के लिए इम्पोर्ट की फॉरेन करेंसी को बचाने का काम किसानों को करना चाहिए। उन्होंने देशभर के किसानों से अपील की है कि हम दलहन के क्षेत्र आत्मनिर्भर बनें और पोषण अभियान को भी आगे बढ़ाएं। शाह ने कहा कि बीते 9 साल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में खाद्यान्न उत्पादन में बहुत बड़ा बदलाव आया है। वर्ष 2013-14 में खाद्यान्न उत्पादन कुल मिलाकर 265 मिलियन टन था और 2022-23 में यह बढ़कर 330 मिलियन टन तक पहुंच चुका है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद के 75 साल में किसी एक दशक का विश्लेषण करें तो सबसे बड़ी बढ़ोत्तरी मोदी जी के नेतृत्व में देश के किसानों ने की है। उन्होंने कहा कि इस दौरान दलहन के उत्पादन में भी बहुत बड़ी बढ़ोतरी हुई है मगर तीन दलहनों में हम आत्मनिर्भर नहीं है और उसमें हमें आत्मनिर्भर होना है।

डॉ. राजकुमार सिंह तोमर ने 37 साल बिताए बुंदेलखंड में

एक वैज्ञानिक, जिन्होंने ईमानदारी, लगन व मेहनत का दामन थामे निभाई जिम्मेदारी

शिवपुरी। जागत गांव हमार

डॉ. राजकुमार सिंह तोमर, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, दतिया व टीकमगढ़ 37 वर्ष सेवा पश्चात (दोनों कृषि विश्वविद्यालयों) की सेवा 31 दिस बर, 2023 को सेवा से निवृत हो चुके हैं। डॉ. तोमर की संपूर्ण सेवा काल का कार्यक्षेत्र बुन्देलखण्ड अंचल ही रहा है। डॉ. तोमर ने इस अंचल के कृषि के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास हेतु कई नवाचारों को प्रयोग में लाया है। आपने ज्वार, गेहूं, उड़द, चना, सोयाबीन, सरसों, अलसी व तिल फसलों पर उल्लेखनीय अनुसंधान कार्य किया है। डॉ. तोमर की विकसित तकनीकीयों को किसान आज भी अपना रहे हैं। कृषि तकनीको को कम समय में लाखों किसानों तक पहुंचाने हेतु आधुनिक सूचना एवं प्रौद्योगिकियों जैसे- व्हाटसऐप, यूटूब, फेसबुक, बेवसाइट, ट्यूटर का अभिनव प्रयोग किया था। इन तकनीकीयों में मोबाइल पर कृषि संदेश एकदम नया प्रयोग 2008 में प्रारंभ किया गया इसमें लाखों किसानों के मोबाईल पर सप्ताह में दो बार हिन्दी में कृषि संदेश भेजे जाते थे। डॉ. तोमर ने बदलते जलवायु परिदृश्य में जलवायु समुस्थानशील तकनीकियों जैसे- वर्षा जल संरक्षण, अत: खेत नमी संरक्षण तकनीक, कृषि क्षेत्र में यंत्रीकरण, बरानी परिस्थिति में दलहन एवं तिलहन की खेती को बढ़ावा, दलहन-तिलहन की सूखा सहनशील किस्म के प्रचलन को बढ़ावा देना, वर्ष भर हरे चारे की उपलब्धता बढ़ाने हेतु प्रयास व स्वास्थ्य एवं अधिक आय हेतु कड़कनाथ मुर्गी पालन को प्रचलन में लाना व एकीकृत फसल प्रणाली व फसल विविधिकरण को बढ़ावा देना प्रमुख है। डॉ. तोमर ने संस्थापक प्रमुख के रूप में दतिया व टीकमगढ़ कृषि विज्ञान केन्द्रों को शून्य की स्थिति से संसाधन एवं ज्ञान केन्द्र के रूप में पूर्ण विकसित किया है। वर्तमान समय में दोनों कृषि विज्ञान केन्द्र उत्तमता की श्रेणी में प्रथम स्थान रखते हैं। डॉ. आर.के.एस. तोमर सामायिक एवं सटीक जानकारी देने के कारण कृषकों एवं अन्य हितकारकों में लोकप्रिय वैज्ञानिक हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र दतिया के प्रक्षेत्र की ऊबड़-खाबड़, ऊसर भूमि का पुर्नउद्धार कर तीन वर्षों में खेती योग्य बनाया, तीन तालाबों का निर्माण जिनमें 3000 धन मीटर वर्षा जल संग्रहीत जल से 42 हैक्टेयर खेती की सिंचाई होती है।

मंत्री तुलसी सिलावट बोले-बुंदेलखंड के 61 लाख लोगों को शुद्ध जल देना पहली प्राथमिकता, मध्यप्रदेश में बढ़ेगा सिंचाई का रकबा

भोपाल। तुलसी सिलावट को नई कैबिनेट में जल संसाधन मंत्रालय दिया गया है। मंत्रालय मिलने के बाद उन्होंने एक बातचीत में कहा कि बुंदेलखंड के 61 लाख लोगों को शुद्ध जल देना उनकी पहली प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि अभी पूरा ध्यान केन बेतवा प्रोजेक्ट पर है। उसे तेजी से पूरा किया जाएगा। इससे न सिर्फ लोगों को शुद्ध जल मिलेगा बल्कि 103 मेगावाट बिजली भी मिलेगी। सिलावट ने कहा कि इससे पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र में विकास तेज होगा। सिलावट ने कहा कि मप्र में सिंचाई का रकबा 2004 में 6 लाख अब 47 लाख हैक्टेयर था। अब 65 लाख हैक्टेयर में सिंचाई करेंगे। कुल 18 लाख हैक्टेयर सिंचाई का रकबा बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि 2005 में नदियों को जोड़ने की योजना आई थी जो पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का सपना था। केन बेतवा योजना 46 हजार करोड़ की परियोजना है। इससे उस क्षेत्र में 8 लाख 11 हजार हैक्टेयर सिंचाई का रकबा होगा। उप्र और बुंदेलखंड के 61 लाख लोगों पीने का शुद्ध जल मिलेगा। 103 मेगावाट बिजली होगी। इन सबसे पर्यटन आएगा और विकास तेज होगा। केन-बेतवा लिंक परियोजना मध्यप्रदेश की सर्वप्रथम परियोजना है, जिसका 2005 में शुभारंभ हुआ। इस परियोजना से टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, झांसी और बुंदेलखंड के क्षेत्रों को फायदा होगा। केन-बेतवा लिंक परियोजना नदियों को आपस में जोड़ने की परियोजना है, इसका उद्देश्य यूपी के सूखाग्रस्त बुंदेलखंड क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के लिए मध्य प्रदेश की केन नदी के अधिशेष जल को बेतवा नदी में हस्तांतरित करना है।

जागत गाँव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, **संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)